International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 978-979

भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं में विभिन्न कलाओं की भूमिका

डॉ० सुषमा सिंह[1], ज्योति रानी[2]
शोध निर्देशिका, दृश्य कला विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।
शोधार्थी, दृश्य कला विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

कसी भी देश के विकास में उसकी संस्कृति का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। देश की संस्कृति, उसके मूल्य, लक्ष्य, प्रथाएं और सांझा विश्वास का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतीय संस्कृति कभी कठोर नहीं रही इसलिए यह आधुनिक काल में भी गर्व के साथ जिन्दा है। 'अनेकता में एकता' सिर्फ कुछ शब्द नहीं है, बल्कि एक ऐसी चीज है जो भारत जैसे सांस्कृतिक और विरासत में समृद्ध देश पर पूरी तरह लागू होती है। कुछ आदर्श वाक्य या बयान, भारत के उस दर्जे को बयां नहीं कर सकते जो उसने विश्व के नक्शे पर अपनी रंगारंग और अनूठी संस्कृति से पाया जाता है। मौर्य, चोल और मुगल काल और ब्रिटिश साम्राज्य के समय तक भारत हमेशा से अपनी संस्कृति, परम्परा और अतिथ्य के लिए मशहूर रहा। रिश्तों में गर्माहट और उत्सवों में जोश के कारण यह देश विश्व में हमेशा अलग नजर आया है। इस देश की उदारता और जिंदादिली ने बड़ी संख्या में सैलानियों को इस जीवंत संस्कृति की ओर आकर्षित किया, जिसमें धर्मों, त्यौहारों, खाने, कला, शिल्प, नृत्य, संगीत और कई चीजों का मेल है। देवताओं की इस धरती में संस्कृति, रीति–रिवाज और परम्पराओं का अनूठा संगम देखने को मिलता है। संस्कृति क्या हैं? जब कभी हम सुनते है कि यह हमारी संस्कृति नहीं है, तो इसका क्या आशय होता है? एक परिभाषा के रूप में 'संस्कृति उन सामाजिक प्रक्रियाओं की समष्टि है जिनका कुछ अभिप्राय होता है, संचरण और आदान–प्रदान होता है।' इस प्रकार, संस्कृति विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक अनुभवों का सम्मिश्रण होती है, जो हमेशा परिवर्तित होते रहने की प्रक्रिया में रहती है। संस्कृति स्थिर नहीं होती, बल्कि यह अस्थायी, गतिशील और परिवर्तनशील होती है। किसी संस्कृति का उद्भव और उपभोग उस वर्ग पर आश्रित होता है, जो समाज में सृजन का निर्णायक और शक्तिशाली होता है। यह इस बात पर भी निर्भर होता है कि इसे किस प्रकार प्रस्तुत या प्रचारित किया जाता है और समाज में कैसे स्वीकृत होता है। संस्कृति के व्यापक अर्थ में मानवीय जीवन के अधिकतर पहलू सम्मिलित होते हैं– हम कैसे अपने आप को अभिव्यक्त करते हैं– बातों से, संचार से, हमारी भाषा और साहित्य से हम कैसे नए तरीके तय करते हैं, जिसके माध्यम से व्यक्तिगत रूप से और सामाजिक समुदाय के सदस्य के रूप में हम स्वयं को अभिव्यक्त कर सकें। हमारी भौतिक मुद्राएँ, हम प्रार्थना कैसे करते हैं या अपनी धार्मिकता कैसे अभिव्यक्त करते हैं।

जिसे हम 'संस्कृति' का नाम देते हैं, वह व्यक्तियों और समुदायों के सांझे अनुभवों के संगठित होने का परिणाम है और इसलिए इसमें अनेक ऐतिहासिक परम्पराएँ शामिल होती है। परम्पराओं में निरंरता अवश्य है, पर समय–समय पर ये बदलती और विकसित होती रहती है जिसके परिणामस्वरूप नवीन संस्कृतियों का निर्माण होता है। मिली–जुली या सम्मिश्र संस्कृति को सांस्कृतिक सामंजस्य या विभिन्न संस्कृतियों का सुसंगत तरीके से सम्मिलन के रूप में नहीं मानना चाहिए। वस्तुतः यह जैविक रूप से विकसित संस्कृति है, जो विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक अनुभवों के शांत तथा विरोधी तत्वों को अपने में शामिल करती है। सम्मिश्र संस्कृति की धारणा में सांस्कृतिक बहिष्करण की चेष्ठा भी सम्मिलित है, जब कुछ व्यक्ति या समह कुछ सीमाओं और बंधनों में रहकर संस्कृति को परिभाषित करने का प्रयत्न करते हैं। एक ओर संस्कृति आत्मसात्कारी या समावेशी और एकीकरणात्मक होती है, वही दूसरी ओर वह निरंतर बातचीत, संघर्ष और पुनः तैयार की गई रणनीति का परिणाम होती है। संस्कृति निरंतर परिवर्तित होती रहती है, पर यह सदैव स्वतः अनायास विकसित नहीं होती। संस्कृति प्रायः प्रभुत्वशाली हितों द्वारा उत्पन्न होती है। संसाधनों और अवसरों तक असमान पहुँच अनुमति नहीं देती कि सभी समूह मिश्रित संस्कृति में समान योगदान दें। मिली–जुली संस्कृति का एक पहलू यह है कि सभी समूहों, जिसमें अल्पसंख्यक भी शामिल है, को अभिव्यक्ति का समान अवसर दिया जाए, प्रभुत्वशाली समहों के साथ बातचीत को प्रोत्साहन दिया जाए और दोनों में परिवर्तन की अनुमति दी जाए, ताकि सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा मिले जो मिश्रित संस्कृति का आदर्श है। संस्कृति का वर्गीकरण प्रायः कुलीन या लोकप्रिय, शास्त्रीय या लोक, उच्च या निम्न के रूप में किया जाता है। इनमें से कुछ विभेदों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है, क्योंकि ये मात्र श्रेणियां हैं। ये वर्ग असंपृक्त नहीं हैं, इनमें निरंतर पारस्परिक प्रभाव पड़ता रहता है। इस प्रकार, हमारी तथाकथित शास्त्रीय परंपराएँ भी परिवर्तित होती रही हैं और उनका रूपातंरण भी होता रहा है। संस्कृति समयानुसार गतिशील और जीवंत, मूर्त और अमूर्त दोनों होती है। वह नया आकार प्राप्त कर सकती है, उसकी पुनर्कल्पना की जा सकती है, उसे सहयोगित किया जा सकता है या राजनीतिक लाभ के लिए उसे नष्ट भी किया जा सकता है। इसलिए संस्कृति को विस्तृत और तुलनात्मक तरीके से समझना आवश्यक हैं, परंतु यह भी आभास रहे कि विभिन्न समूहों के पृथक और विशिष्ट समाज के निर्माण में योगदान देते हैं। इस संदर्भ मे राज्य की भूमिका अनुकूल और सक्रिय होनी चाहिए, ताकि उसमें अल्पसंख्यकों को भी सम्मिलित किया जा सके। एक आदर्श के रूप में, समजा को संस्कृति की अनेक अभिव्यक्तियों का पता लगाना चाहिए और उनके सामाजिक तथा ऐतिहासिक संदर्भो पर जोर देना चाहिए। ताकि वह सभी सामजिक समूहों को समान अधिकार और अवसर देने का आश्वासन प्रदान कर सके।

कला हमारे भौतिक तथा मानसिक कल्याण को समृद्ध करने के लिए आवश्यक है। कला प्रदर्शन, कला का वह रूप है जिसमें कलाकार शरीर या आवाज का प्रयोग कलापूर्ण अभिव्यक्तियों के

लिए करते हैं। परंपरागत कला प्रदर्शन में शामिल है– नाट्य कला, अभिनय कला, संगीत सरकस, जादू, स्वाँग तथा नृत्य।

नृत्य तथा उसका सौंदर्यशास्त्र

नृत्य संचार का एक रूप है जो मनोभावों और आवेगों को अभिव्यक्त करता है। नृत्य, लय–ताल के साथ शरीर की क्रिया है जो प्रायः संगीत के साथ एक निश्चित स्थान पर विचार या मनोभाव की अभिव्यक्ति के लिए कला के रूप में किया जाता है। नृत्य सभी संस्कृतियों में अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिकाएँ भी निभाता रहा है, विशेषकर समारोह, मनोरंजन, धार्मिक अनुष्ठान और मन–बहलाव में। भारतीय शास्त्रीय नृत्यों ने अन्य भारतीय प्रदर्शन कलाओं को अत्यधिक प्रभावित किया है, जैसे– नाट्यकला, संगीत। भारत के शस्त्रीय नृत्य रूप अपने शक्तिशाली पृथक पहचान के लिए भी जाने जाते है। नृत्य भारतीय संस्कृति और परंपरा के अन्य पहलूओं की तरह हजारों वर्षो से विकसित हो रहा है। आज के भारतीय शास्त्रीय नृत्यों का स्त्रोत नाट्यशास्त्र में ढूँढ़ा जा सकता है। जो सभी भारतीय शास्त्रीय नृत्य को मंदिर कला के रूप में देखा गया। भारत में ऐतिहासिक तथ्य प्रायः पौराणिक जामा पहने हुए है। पुराण कथा विश्वास पर आधारित हैं और विश्वास प्रायः पौराणिक कथाओं के रूप में आता है। भारतीय शास्त्रीय नृत्य की उत्पति का उल्लेख पौराणिकी शब्दावली में मिलता है। हमें ऐसी अनेक पौराणिक कथाएँ मिलती है जो शास्त्रीय नृत्य के अस्तित्व की प्राचीनता को प्रमाण्ति करती है। हमें इसके समर्थन में अनेक साहित्यिक कृतियाँ भी मिलती है।

उदाहरणस्वरूप, भारतीय नृत्य की सर्वोच्च प्रतिमूर्ति भगवान शिव हैं, जिन्हें प्रायः 'नटराज' क्हा जाता है। (नृत्य के राजा)। यदि नटराज के रूप में शिव की दिव्य अभिव्यक्ति व प्रकटीकरण है, तांडव नृत्य तो नटवर के रूप में कृष्ण गायों के झुंड के समक्ष नृत्य करते है।

संस्कृति और शिल्प दोनों एक दूसरे से इस तरह से गूंथे हुए है, कि उन्हें पृथक करके नहीं देखा जा सकता। कला सौन्दर्य का स्थूल रूप शिल्प में है और सूक्ष्म रूप शैली में है। शिल्प का मतलब रचना प्रक्रिया से है। रचना के प्रारम्भ से अन्त तक तत्वों के संयोजन से शैली का निर्माण होता है, वह सभी शिल्प में है। शिल्प के विषय में विद्वानों के भिन्न–भिन्न विचार है। पहला वह, जो शिल्प को साध्य के रूप में मानते है, दूसरे वह, जो शिल्प को साधन के रूप में मानते है। शिल्प का आरम्भ भावनाओं से होता है और विस्तार कला से होता है तथा अन्त संस्कृति से होता है। इस प्रकार सौन्दर्य संगीत और सभी कलाओं में शिल्प की महत्वपूर्ण भूमिका है।

उपसंहार

अतः संस्कति सामाजिक अंतः क्रियाओं एवं सामाजिक व्यवहारों के उत्प्रेरक प्रतिमानों का समुच्चय है। इस सम्मुचय में ज्ञान, विज्ञान, कला, आस्था, नैतिक मूल्य एवं प्रथाएं समाविष्ट होती है। संस्कृति भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, एवं राजनीतिक तथा अध्यात्मिक अभ्युदय के उपयुक्त मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाओं और सम्यक् चेष्टाओं की समष्टिगत अभिव्यक्ति है। यह मनुष्य के वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन के स्वरूप का निर्माण, निर्देशन, नियमन और नियंत्रण करती है। सांस्कृतिक मान, प्रथाओं के सामान्यीकरण एवं सुसंगठित समन्वय के रूप में स्थिरता की और उन्मुख होते है, यद्यपि संस्कृति के विभिन्न तत्वों में परिवर्तन की प्रक्रिया शाश्वत चलती रहती है। अतः संस्कृति उन संस्कारों से समबद्ध होती है, जो हमारी वंश परम्परा तथा सामाजिक विरासत के संरक्षण के साधन है। इनके माध्यम से व्यवहार की विशिष्टताओं का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में निगमन होता है। निगमन की प्रक्रिया में संस्कृति का अस्तित्व निहित होता है। इसकी संचयी प्रवृति इसके विकास को गति प्रदान करती है। जिससे नवीन आदर्श जन्म लेते हैं। अतः विविधता के बावजूद भारत के लोग अपनी संस्कृति के बल पर एकजुट हैं। वे अपनी संस्कृति और परम्परा पर गर्व महसूस करते हैं। चाहे अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह हो या सौंदर्य प्रतियोगिताएं, विश्व मंच पर भारत ने प्रतिभा और संस्कृति का प्रदर्शन किया है। कई शासक यहां आए लेकिन भारत की संस्कृति को नुकसान नहीं पहुंचा पाए और भारतीयों ने अपने सांस्कृतिक मूल्यों को सहेज कर रखा है। समय के साथ चलने और लचीलेपन के कारण भारतीय संस्कृति आधुनिक और स्वीकार्य भी है।

संदर्भ

1. आधुनिक कला कोश, विनोद भारद्वाज, सचिन प्रकाशन
2. कला सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र, अशोक, संयम पब्लिकेशन
3. चित्रकला के मूल आधार, 510 शुकदेव क्षेत्रीय, चित्रानन प्रकाशन, मुजफ्फरनगर।
4. भारतीय कलाः डॉ. शिव स्वरूप संशय, स्टूडेन्ट फ्रैन्डस, इलाहाबाद।
5. रस सिद्धात और सौन्दर्यशास्त्र, डॉ. निर्मला जैन, नैशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।
6. पारंपरिक कला एवं लोक संस्कृति, कमलेश माथुर, शीतल ऑफसेट , जयपुर ISBN-778-81-7711-222-1
7. लोकचित्रकलाः डॉ. श्यामसुंदर दुबे, नेश्नल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर एवं दिल्ली ISBN-81-8018-064-6
8. हरियाणा का इतिहासः डॉ. एजाज अहमद, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली ISBN-978-93-83728-56-4